केन्या में पेड़ लगाना

वंगारी मथाई की कहानी



हमें खुद अपने काम के बारे में सोचना चाहिए. अगर हम समस्या का हिस्सा हैं, तो फिर हम उसके समाधान का हिस्सा भी बन सकते हैं.

2004 के नोबेल शांति पुरस्कार की विजेता और "ग्रीन बेल्ट मूवमेंट" की संस्थापक वंगारी मथाई, केन्या के पहाड़ी इलाकों में पली-बढ़ीं. वहां पहाड़ियां, पेड़ों से छाई रहती थीं, झरने मछलियों से भरे रहते थे, और लोग अपने-अपने खेतों में अपने खाने की चीज़े उगाते थे. लेकिन सालों-साल जैसे-जैसे अधिक-से-अधिक पेड़ों की कटाई हुई, उससे केन्या एकदम बदल गया.

जब वंगारी अमेरिका में कॉलेज ख़त्म करके घर लौटीं, तो उन्होंने पानी के झरनों को सूखा, लोगों को कुपोषित, पेड़ों को कटा और ज़मीन को बंजर पाया. क्या वो अकेले पेड़ों को वापस ला सकती थीं और बगीचों को पुनर्स्थापित कर सकती थीं?

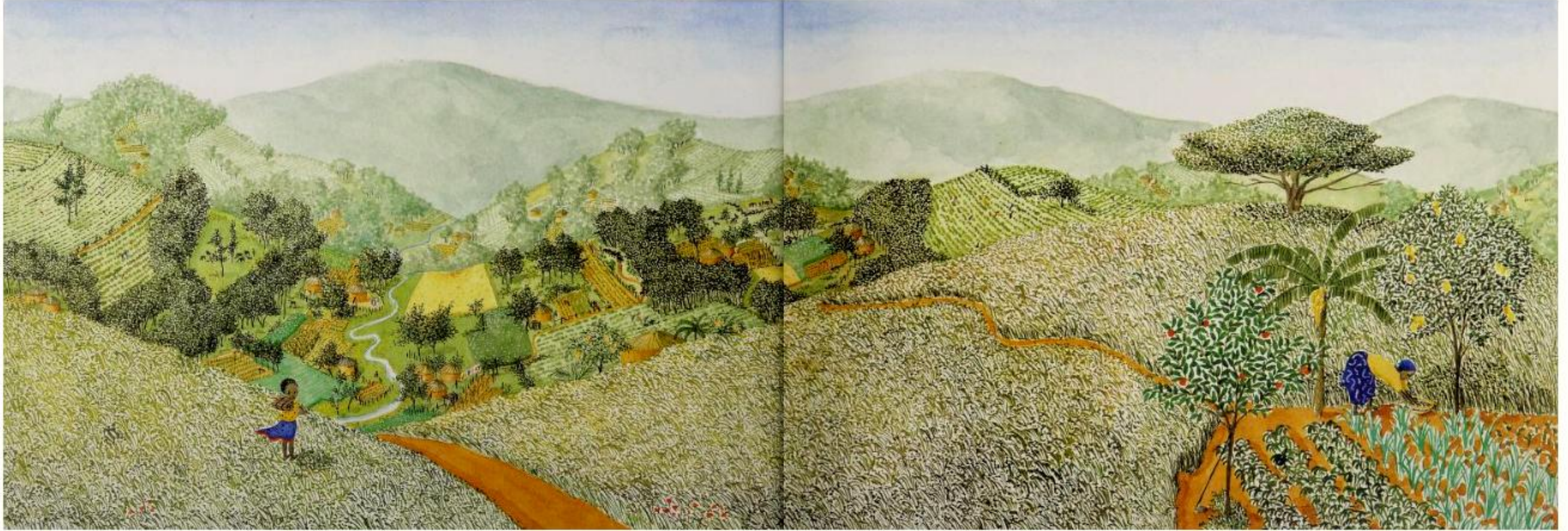
क्लेयर निवोला ने सुन्दर चित्रों और सरल शब्दों में पर्यावरणविद वंगारी मथाई की प्रेरक कहानी सुनाई है.

केन्या में पेड़ लगाना

वंगारी मथाई की कहानी

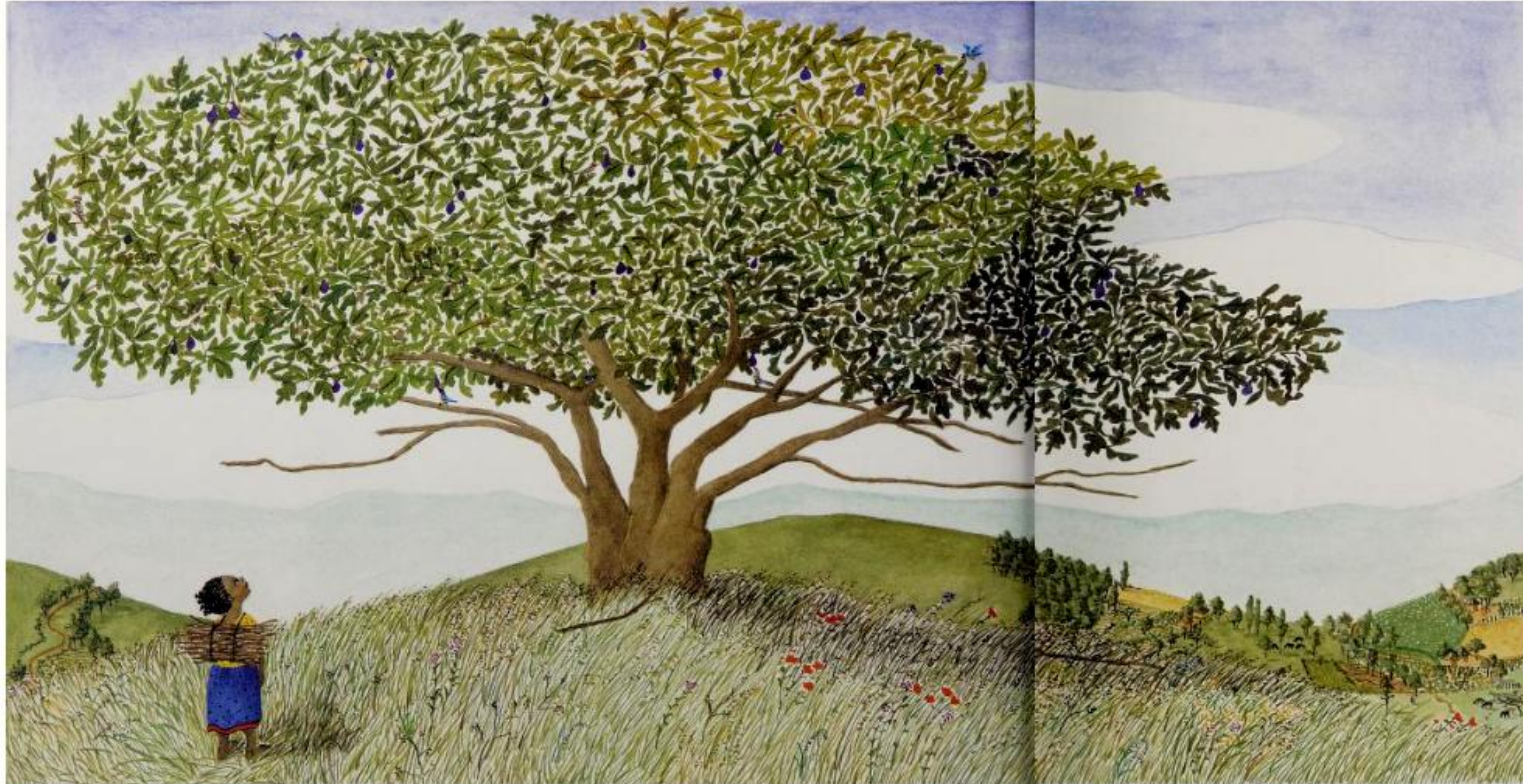


क्लेयर निवोला



वंगारी मथाई बार-बार कहती थीं, कि जब वो मध्य केन्या की पहाड़ियों के एक फार्म पर बड़ी हो रही थीं, तो उस समय ज़मीन पर सभी ओर हरे-भरे पेड़ लहराते थे.

अंजीर के पेड़, जैतून के पेड़, क्रोटन, और फ्लेम के पेड़ से ज़मीन पूरी तरह ढंकी रहती थी. और तब नदियों के शुद्ध पानी में भरपूर मछलियां तैरती थीं.



अंजीर का पेड़ तब पवित्र था, और वंगारी को उसकी गिरी हुई टहनियों को भी जलाऊ लकड़ी के लिए घर ले जाने की अनुमति नहीं थी.

वे अपने घर के पास के झरने से माँ के लिए पानी लाती थीं. वहां वो मेंढकों के अंडों से खेलती थीं. वो मेंढकों के अंडों को मोतियों की माला जैसे इकट्ठा करती थीं, हालांकि वे उनकी उंगलियों में से पानी में बार-बार वापस फिसल जाते थे.

वंगारी का दिल अपने देश केन्या की सुंदरता से भरा था. उसके बाद वो बेनेडिक्ट नन्स द्वारा चलाए गए कॉलेज में पढ़ने के लिए अमेरिका गईं. कॉलेज उनके देश और घर से बहुत दूर था. वहां उन्होंने जीव-विज्ञान का अध्ययन किया. वो वंगारी के लिए एक प्रेरणादायक समय था. उस काल में अमेरिकी छात्र, दुनिया को एक बेहतर जगह बनाने का सपना देखते थे. ननों ने भी वंगारी को सिर्फ अपने बारे में नहीं, बल्कि खुद से परे की दुनिया के बारे में भी सोचना सिखाया.

बड़ी उत्सुकता और आशा से वंगारी केन्या वापिस लौटीं! उन्होंने बहुत कुछ नया सीखा था और अब वो अपने ज्ञान का उपयोग लोगों के लिए करना चाहती थीं!

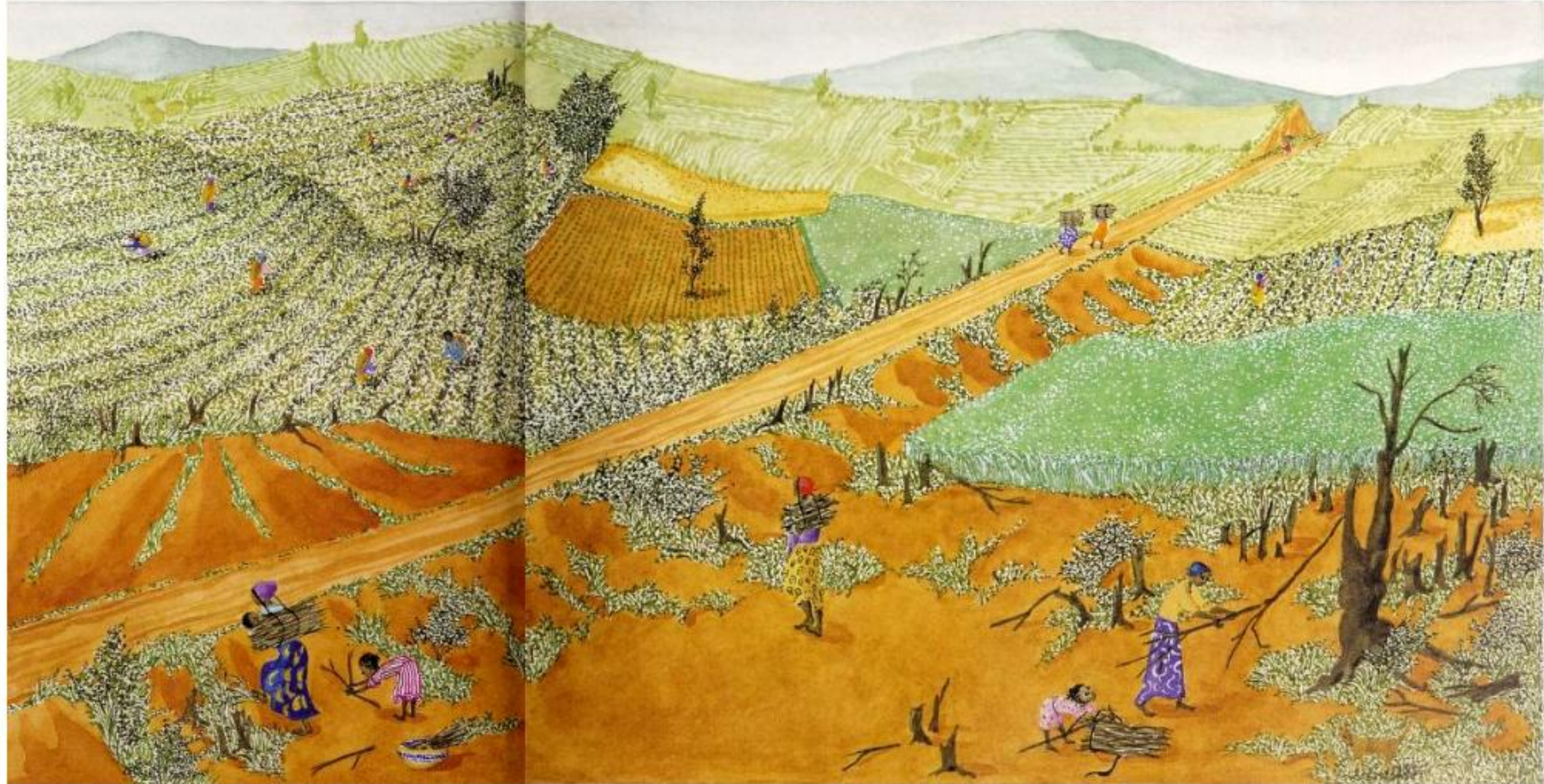


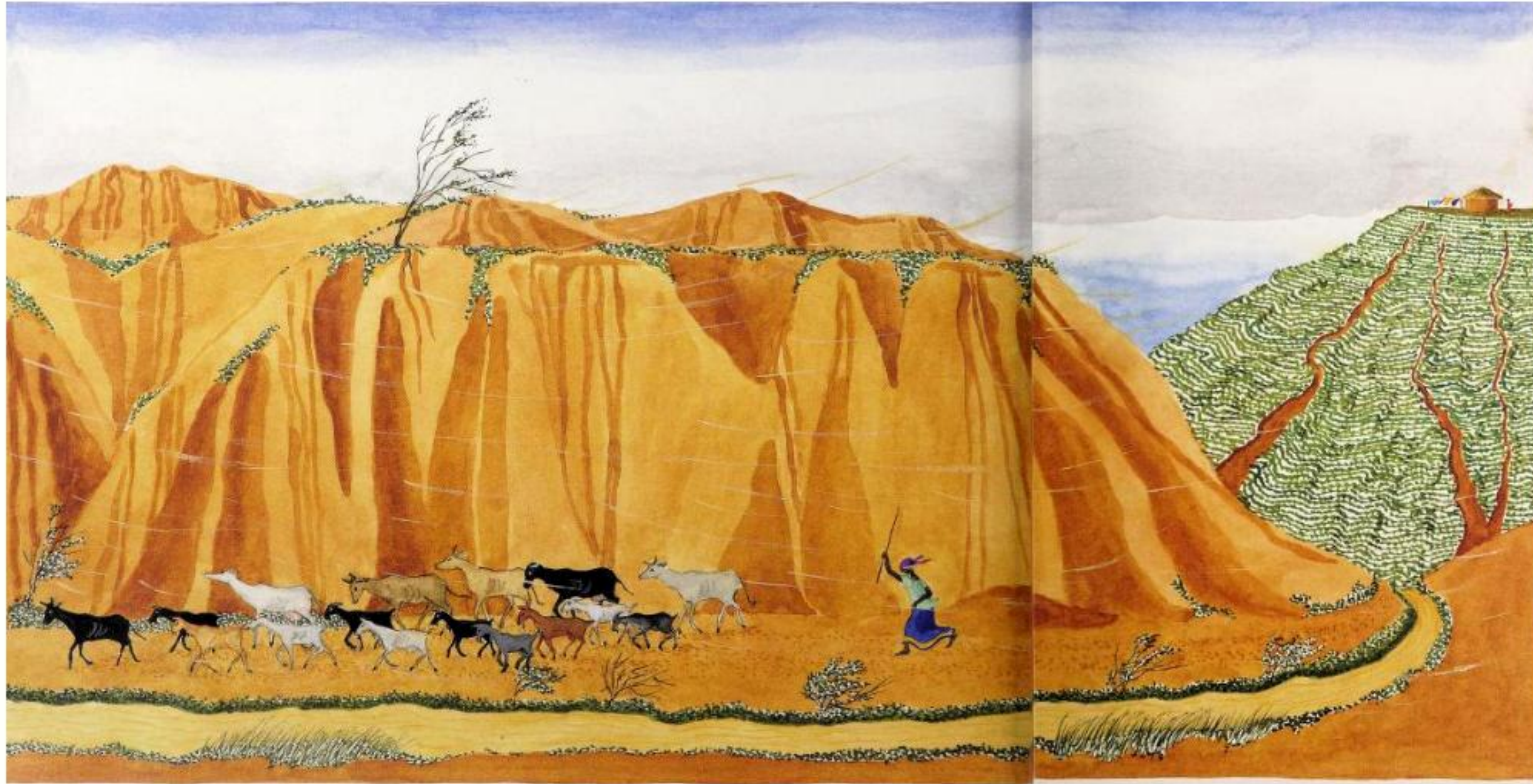


वो केन्या से सिर्फ पांच साल दूर रहीं. लेकिन वापिस लौटने पर उन्हें लगा जैसे वो केन्या से बीस साल दूर रही हों - क्योंकि इस बीच केन्या इतना अधिक बदल गया था.

वंगारी ने अंजीर के पेड़ों को कटते हुए देखा, छोटे झरनों को सूखा हुआ पाया. अब उन्हें मेंढक और उनके चांदी जैसे अंडों का कोई नामो-निशां नहीं मिला. जहां कभी लोग छोटे-छोटे खेतों में अपने परिवार की जरूरत की चीज़ें उगाते थे वहां अब वे निर्यात के लिए चाय उगाने लगे थे, और सभी लोग बाज़ार में बेचने के लिए फसलें उगा रहे थे. वंगारी ने पाया कि अब लोग अपने खुद खाने के लिए फसलें नहीं उगा रहे थे, क्योंकि वो अब खाने का सारा सामान दुकानों से खरीदते थे. दुकानों का खाना महंगा तो था ही, पर साथ-साथ वो उनकी सेहत के लिए भी अच्छा नहीं था. उस कारण बच्चे और बड़े सभी कमजोर और अक्सर बीमार रहते थे.

उसने देखा कि जहां कभी हरे-भरे पेड़ों के नीचे गाय और बकरियां चरती थीं अब वहां ज़मीन लगभग बंजर हो चुकी थी, और सभी जंगल नष्ट हो गए थे. "निर्यात खेती" करने के लिए ज़मीन पर पेड़ों का पूरी तरह सफाया कर दिया गया था. उससे महिलाओं और बच्चों को घर में खाना पकाने की जलाऊ लकड़ी की तलाश में अब बहुत दूर जाना पड़ता था. कभी-कभी लकड़ी या झाड़ी को काटने के लिए उन्हें घंटों चलना पड़ता था. धीरे-धीरे बचे-खुचे पेड़ भी कटते जा रहे थे और ज़मीन का अधिकांश हिस्सा एक रेतीले रेगिस्तान के रूप में नंगा हो गया था.





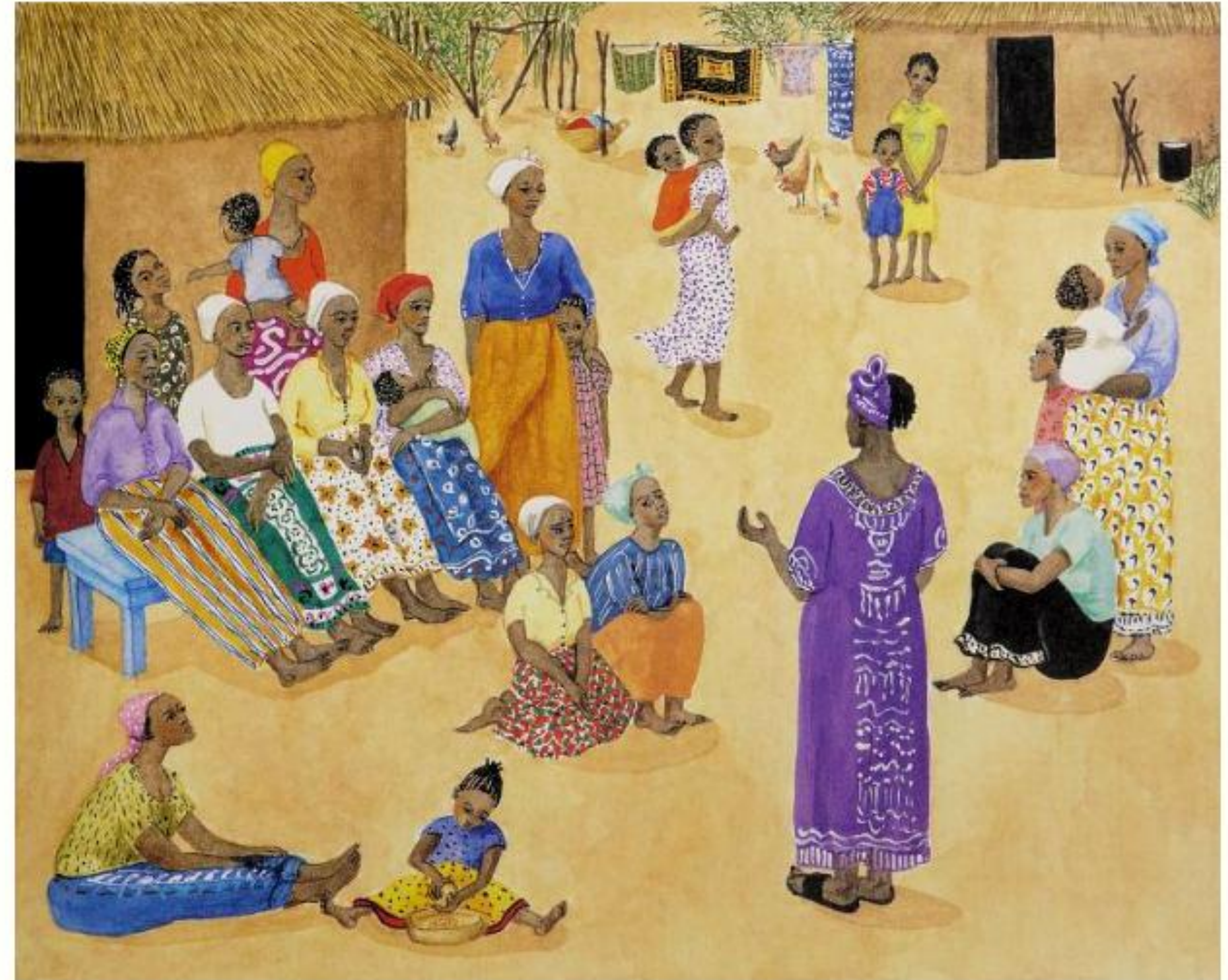
पेड़ों के बिना मिट्टी को पकड़े रखने के लिए ज़मीन में जड़ें बाकी नहीं बचीं थीं. पेड़ों के बिना कोई छाया भी नहीं थी. ऊपर की उर्वर मिट्टी अब सूखकर धूल में बदल गई थी, और "शैतान हवा" उसे इधर-उधर उड़ाती थी. बारिश की बूंदे ढीली मिट्टी पर गिरतीं और वे उसे धोकर झरनों और नदियों में बहाकर ले जातीं जिससे वहां का पानी गंदा हो जाता था.

"हमारे पास पीने का साफ पानी नहीं है," ग्रामीण महिलाओं ने शिकायत की, "खाना पकाने के लिए जलाऊ लकड़ी नहीं है. हमारी बकरियों और गायों को चरने के लिए घास और झाड़ियां भी नहीं हैं, इसलिए वे बहुत कम दूध देतीं हैं. हमारे बच्चे भूखे हैं, और अब हम पहले से भी ज़्यादा गरीब हैं."

वंगारी ने देखा कि वो लोग जो कभी अंजीर के पेड़ों का आदर करते थे, उन्होंने अब उन्हें काट दिया था. लोग उस ज़मीन का सम्मान करना भूल गए थे जो उन्हें भोजन देती थी. अब भूमि, कमजोर और पीड़ित थी और अब वो लोगों को भोजन देने में सक्षम नहीं थी. उससे लोगों का जीवन पहले से कहीं अधिक कठिन हो गया था.

महिलाओं ने एक-दूसरे को और सरकार को इसका दोषी ठहराया, लेकिन वंगारी ने किसी से कोई शिकायत नहीं की. वो खुद कुछ करना चाहती थीं. "आप सब सोचें, कि हम खुद क्या कर रहे हैं," उन्होंने बाकी महिलाओं से आग्रह किया. “हम खुद केन्या के पेड़ों को काट रहे हैं. जब हम महसूस करेंगे कि हम खुद समस्या का हिस्सा हैं," उन्होंने कहा, "तभी हम समाधान का हिस्सा भी बन पाएंगे.“

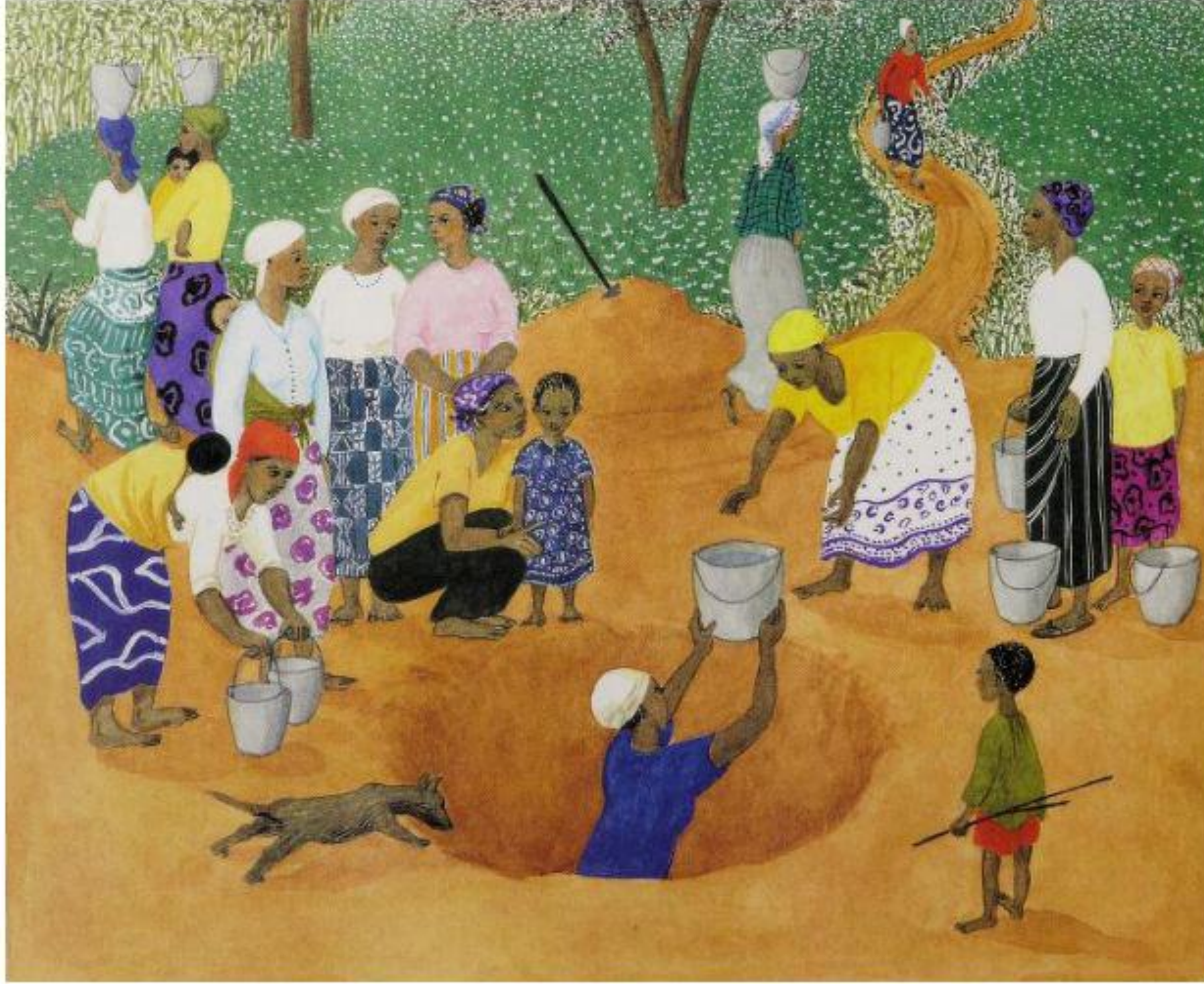
यह वंगारी का एक सरल पर शक्तिशाली विचार था.





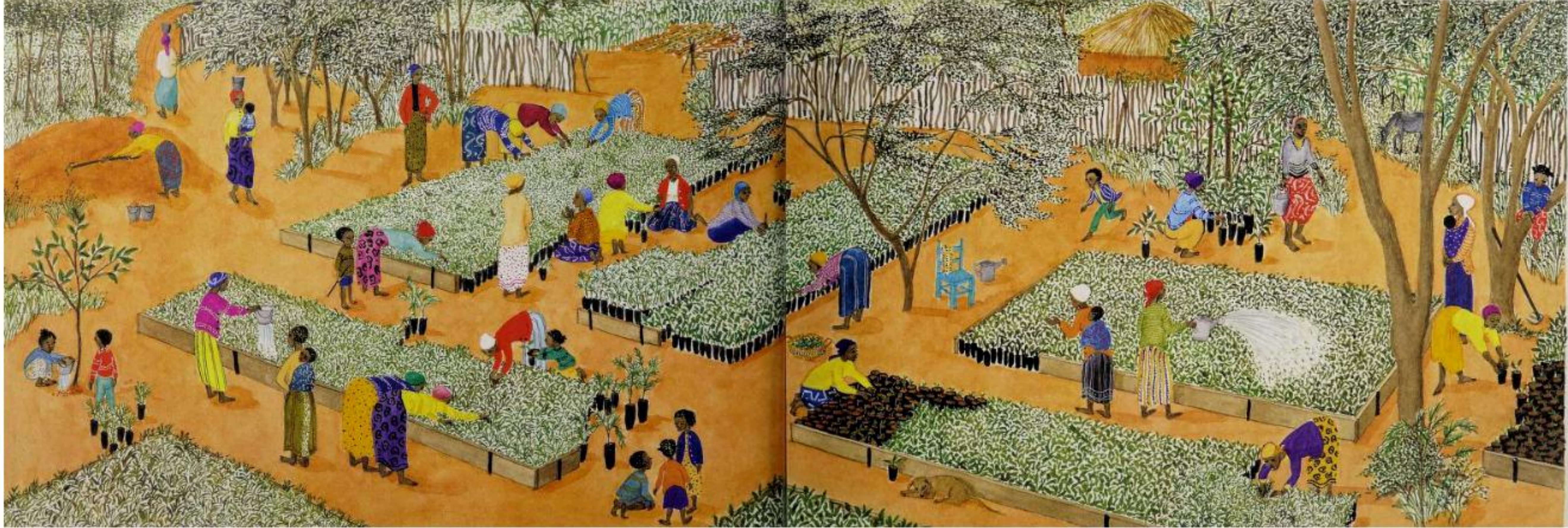
"हम पेड़ क्यों न लगाएं?" उन्होंने महिलाओं से पूछा.

उन्होंने महिलाओं को बचे-खुचे पेड़ों के बीज इकट्ठा करना सिखाया. उन्होंने उन्हें खाद और मिट्टी तैयार करना सिखाया. उन्होंने उन्हें बीज बोना सिखाया. इसके लिए उन्होंने मिट्टी को गीला किया, फिर उसमें एक छड़ी को दबाकर छेद बनाया, और फिर सावधानी से उसमें एक बीज डाला. उन्होंने उन्हें बढ़ते हुए अंकुरों की देखभाल करना सिखाया - जैसे कि वे बच्चे हों, उन्हें दिन में दो बार पानी देने से वो पक्की तौर पर मजबूत बनेंगे.



यह काम आसान नहीं था. पानी बड़ी मुश्किल से मिलता था. अक्सर महिलाओं को अपने हाथों से एक गहरा गड्ढा खोदना पड़ता था और फिर उसमें घुसकर पानी की भारी बाल्टी को अपने सिर के ऊपर बाहर निकालना पड़ता था.

वंगारी ने अपने पिछवाड़े में एक नर्सरी लगाई जो विफल रही; और वहां के सभी नन्हें पौधे मर गए. लेकिन वंगारी हार मानने वालों में से नहीं थीं. उन्होंने हमेशा दूसरों का हौसला बुलंद किया.



बहुत सी महिलाएं पढ़-लिख नहीं सकती थीं. वे माएं थीं और खेती करती थीं. इसलिए सरकार में कोई भी गांव की महिलाओं की बात को, गंभीरता से नहीं लेता था.

लेकिन उन महिलाओं को पेड़ लगाने के लिए स्कूली शिक्षा की आवश्यकता नहीं थी. उन्हें सरकार की मदद के इंतजार की ज़रुरत भी नहीं थी. वे अपना जीवन तुरंत बदलना शुरू कर सकती थीं.

यह सब भारी और कठिन काम था, लेकिन महिलाओं ने इसमें गर्व महसूस किया. धीरे-धीरे, उन्होंने अपने चारों ओर, अपने हाथों की मेहनत का फल देखना शुरू किया. जंगल फिर दुबारा से बढ़ना शुरू हुए. अब जब लोग एक पेड़ काटते, तो उसकी जगह दो पौधे लगाते. अब उनके परिवार स्वस्थ थे, और वे उनके द्वारा लगाए पेड़ों के फल खा रहे थे. कंद, कसावा, चना, और ज्वार अब खेतों में फिर से अच्छी तरह बढ़ रहे थे. अब उनके पास करने के लिए ठोस काम था, और काम ने उन्हें आपस में बिल्कुल वैसे ही संगठित किया जैसे किसी पहाड़ी पर एक-साथ बढ़ते नए पेड़!

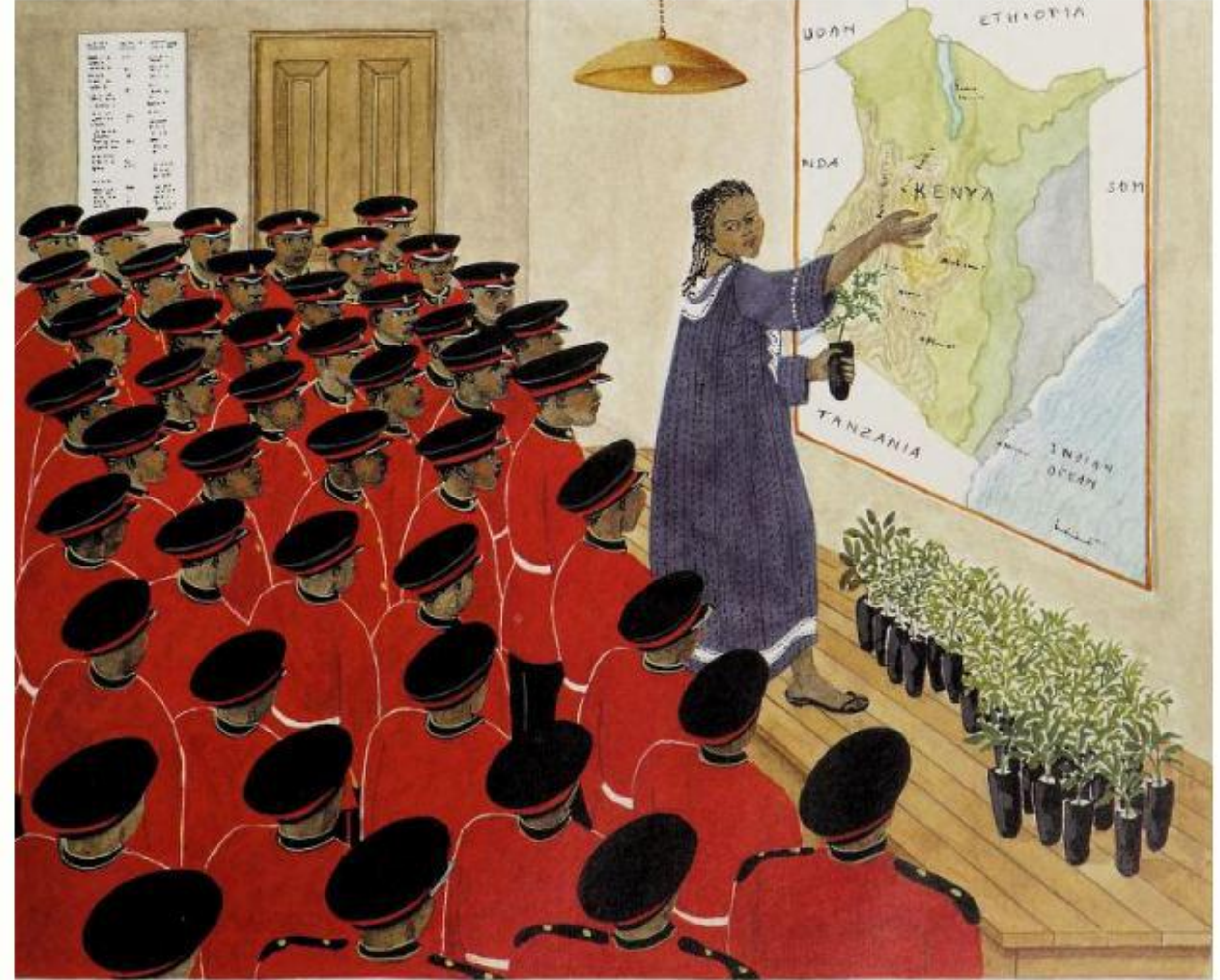
जब पुरुषों ने देखा कि उनकी पत्नियाँ, माएं और बेटियाँ जीवनदाई काम रही थीं, तब उन्होंने उनकी प्रशंसा की और वे भी उस काम में शामिल हुए.

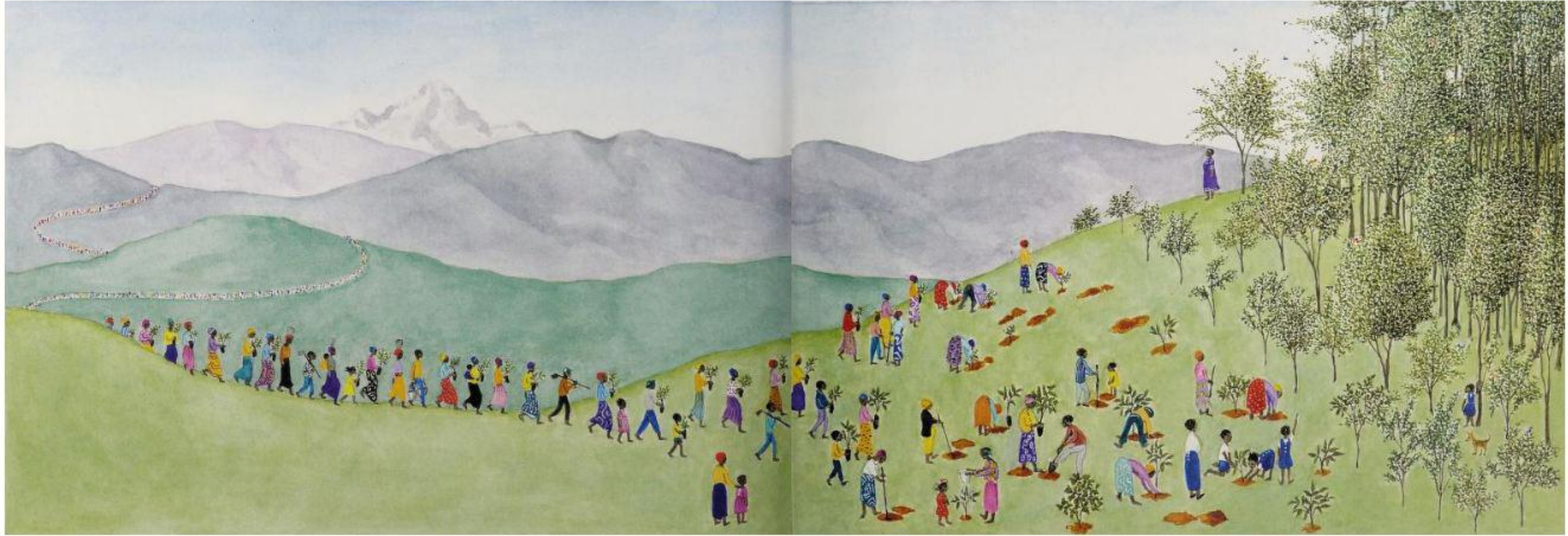




वंगारी ने स्कूलों में पौधरोपण किया और बच्चों को अपने स्कूल में नर्सरी बनाने का तरीका सिखाया.

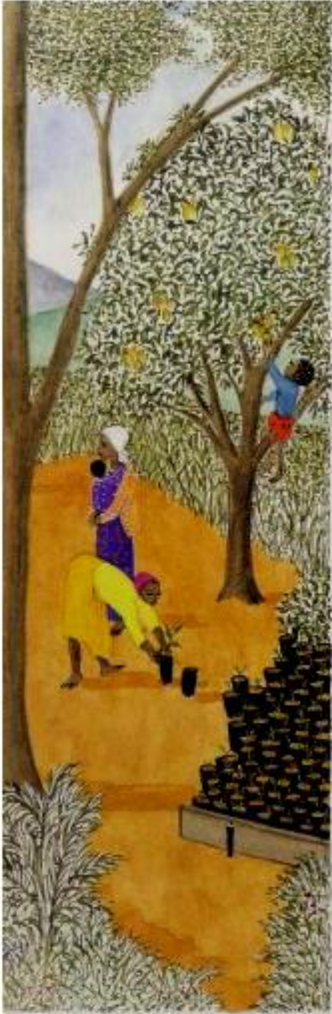
वंगारी ने जेलों के कैदियों और यहां तक कि सैनिकों को भी पौधे दिए. "आप बंदूक पकड़ते हैं," उन्होंने सैनिकों से कहा, "लेकिन आप भला किसकी रक्षा कर रहे हैं? देश की पूरी मिट्टी तो हवा और पानी के साथ गायब हो रही है. आपको दाएं हाथ में बंदूक और बाएं में एक पेड़ पकड़ना चाहिए. तभी आप एक अच्छे सैनिक बनेंगे.”





और इसलिए तीस साल पहले जब वंगारी ने अपना आंदोलन शुरू किया, तब से केन्या में लोगों ने तीन करोड़ से ज़्यादा पेड़ लगाए - और नए पेड़ लगाने का काम अभी भी ज़ारी है.

"नंगी मिट्टी खतरे की निशानी होती है," वंगारी ने कहा, "उस समय वो हमारी मदद के लिए रो रही होती है. नंगी मिट्टी को तुरंत ढंके जाने की आवश्यकता होती है. यह शायद जमीन की प्रकृति है. उसे अपने हरे कपड़ों की सख्त जरूरत होती है."



लेखक का नोट

2004 में, वंगारी मथाई शांति का नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाली पहली अफ्रीका महिला बनीं. यह पुरुस्कार उन्हें उनके देश केन्या के प्राकृतिक पर्यावरण और लोगों की भलाई और स्वास्थ्य के बीच संबंध के लिए प्रदान किया गया. केन्या में, जहां अधिकांश लोग जीवित रहने के लिए जमीन पर निर्भर थे, यह संबंध एकदम स्पष्ट था.

वंगारी मथाई का जन्म 1940 में हुआ था, जब केन्या एक ब्रिटिश उपनिवेश था. एक किसान की बेटी के रूप में वो सेंट्रल-हाइलैंड्स में पली-बढ़ीं. उनके उपजाऊ पहाड़ी देश को, यूरोपीय लोगों ने बसाया था. अंग्रेजों ने उन्नीसवीं सदी के अंत में वहां एक रेलमार्ग बनाया था. विदेशी बसने वालों ने सर्वोत्तम भूमि खुद हड़प ली थी और बड़े-बड़े वृक्षारोपण (प्लांटेशन्स) की स्थापना की, जहाँ उन्होंने केन्या के देसी मजदूरों का इस्तेमाल किया. बचे हुए छोटे भूखंडों पर स्थानीय लोग खेती करते थे. जो कुछ पैदा होता वो उससे अपनी गुज़र चलाते. अमरीका जाने से पहले वंगारी को ऐसे केन्या का अनुभव था. फिर वो कंसास के माउंट स्कॉलैस्टिक कॉलेज में (जिसे अब बेनेडिक्टीन कॉलेज कहा जाता है) जीव-विज्ञान का अध्ययन करने के लिए अमेरिका गईं.

जब वंगारी कंसास में पढ़ रही थीं तब केन्या ने ब्रिटेन से अपनी स्वतंत्रता प्राप्त की. 1966 में अपनी वापसी पर, और उसके बाद के वर्षों में, वंगारी ने केन्या में बड़े बदलाव देखे. केन्या की जनसंख्या तेजी से बढ़ रही थी. जमीन अब सभी लोगों को खिलाने में सक्षम नहीं रही थी. पारंपरिक खेती के तरीकों को छोड़ कर, छोटे किसान अब तेजी से "बाज़ार के लिए खेती" कर रहे थे. निर्यात की फसलों के लिए अधिक-से-अधिक भूमि को साफ किया जा रहा था, और बाकी लकड़ी, घरेलू जरूरतों के लिए काटी जा रही थी. वंगारी ने देखा कि पहले की तुलना में अब वहां अधिक गरीबी, अधिक कुपोषण, अधिक भूख और अधिक बेरोजगारी थी.

केन्या का संकट, पूरी पृथ्वी के संकट की तरह ही था - जहाँ लगातार बढ़ती आबादी, कुछ सीमित प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर थी. इस अहसास से वंगारी मथाई के "ग्रीन बेल्ट मूवमेंट" का जन्म हुआ.

1977 में स्थापित, ग्रीन बेल्ट आंदोलन ने लाखों केन्या के लोगों को एक ठोस उद्देश्य और आत्मविश्वास दिया. अपने शैक्षिक कार्यक्रमों के माध्यम से वंगारी ने लोगों को कौशल सिखाया और उन्हें सक्रिय नागरिक बनाया. इससे पहले लोग हर गलती के लिए सरकार को जिम्मेदार ठहराते थे. "मैंने हमेशा महसूस किया," वंगारी ने कहा, "हमारा काम सिर्फ पेड़ लगाना नहीं था. अपने काम से हम लोगों को पर्यावरण की ज़िम्मेदारी संभालने के लिए प्रेरित करने के साथ-साथ उनका जीवन और भविष्य बदलने के लिए भी काम कर रहे थे."



पूरे केन्या में अब लगभग ग्रीन बेल्ट आंदोलन के एक लाख से ज़्यादा सदस्य हैं, जो हजारों पौधों की नर्सरी के अलावा अनेकों स्थानीय परियोजनाओं को चलाते हैं. एक गांव में, उदाहरण के लिए, पेड़ लगाने के बदले में ग्रीन बेल्ट आंदोलन, किसानों को मधुमक्खिओं का ऋण देता है. पर्याप्त पेड़ लगाने पर किसान मधुमक्खिओं के छत्तों के मालिक बन जाते हैं और वे अपने शहद को अच्छी कीमत पर बेच सकते हैं. पेड़ लगाने वालों को माँ-बकरियों का भी ऋण दिया जाता है. अगर किसान उस बकरी के बच्चे को किसी अन्य सदस्य को देता है, तो फिर वो किसान माँ-बकरी का स्थायी मालिक बन जाता है. इस तरह धीरे-धीरे किसान कई पशुओं का मालिक बन जाता है. पैसे के लेन-देन के बिना भी, इस सरल तरीके से, गरीब लोग अपने जीवन को बेहतर बनाने की दिशा में एक कदम उठा सकते हैं.

इन वर्षों में, वंगारी मथाई के काम ने उनसे दृढ़ता और साहस की मांग की. 1989 में, उन्होंने देश की राजधानी नैरोबी के पास उहुरू पार्क में एक 62 मंज़िली इमारत बनाने की सरकारी योजना का विरोध किया. बदले में, सरकार ने ग्रीन बेल्ट आंदोलन को उसके मुख्यालय से निष्कासित कर दिया. यह मुख्यालय आंदोलन के पास दस सालों से था. सरकार, वंगारी के साथ क्या सलूक करेगी उससे उनके दोस्त बहुत डरते थे. इसलिए वंगारी को बचाने के लिए वे उन्हें अलग-अलग घरों में छिपाते थे. वंगारी के आंदोलन के बाद सरकार को गगनचुंबी इमारत बनाने का अपना इरादा छोड़ना पड़ा.

1999 में, वंगारी के समर्थकों ने, रोपों से लैस होकर, करुरा-वन के कुछ हिस्सों को बेचने की सरकारी योजना का भी पुरज़ोर विरोध किया. सुरक्षा गार्डों ने प्रदर्शनकारियों पर हमला किया और उसके बाद हुए संघर्ष में, वंगारी को चोट लगी. सिर में लगी चोट के लिए वंगारी को अस्पताल में भर्ती कराया गया. पर उस आंदोलन से करुरा-वन वाली सरकारी योजना भी पराजित हुई.

वंगारी खुद को बहादुर नहीं मानती थीं. वो केवल यह मानती थीं कि अगर आप किसी चीज को दृढ़ता से महसूस करते हैं और उसके बारे में समझते हैं तो आपको उसे पाने के लिए कुछ करना चाहिए.

2002 से वंगारी मथाई, केन्या में संसद की सदस्य रहीं. 2003 से वंगारी, पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधन मंत्रालय में पर्यावरण मंत्री रहीं. वह तीन बड़े बच्चों, वावरू, वंजीरा और मुता की मां थीं. 25 सितम्बर 2011 को उनका देहांत हुआ.

समाप्त

"लाखों हाथ क्या कर सकते हैं, यह कभी मत भूलो!"

- वंगारी मथाई

